इन्टरनेट परिचय (नेटवर्को का नेटवर्क)

ईन्टर नेट शब्द दो शब्दो से मिलकर बना है Inter + Net जिसका अर्थ मे ''अन्दर का जाल'' इन्टर नेट का आविष्कार अमेरिका के रक्षा विभाग दल द्वारा 2 सितम्बर 1969 को किया गया था जिसका उद्देश्य अपनी सूचनाओ को गुप्त रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुचाने के लिए किया गया था । जिसे ARPANet के नाम से जाना गया । इंटरनेट सूचना संप्रेषण (Information communication) का एक वैश्विक कंप्यूटर नेटवर्क है यह यूजर्स को सूचना आदान प्रदान करने का मंच प्रदान करता है। इंटरनेट में संचार के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोटोकॉल्स का प्रयोग किया जाता है। जिससे डाटा टांसफर में उद्देश्यपरकता को बनाये रखने मे मदद मिलती है। इन कंप्यूटरों मे सरकारी विश्वविद्यालय कंपनीज एवं लोगो के व्यक्तिगत कंप्यूटर शामिल है । ज्यादातर इंटरनेट सेवा क्लाइंट / सर्वर मॉडल पर कार्य करती है। जब कोई कंप्यूटर फाइल सेड कर रहा होता है। तो क्लाइड कहलाता है। तो वह सर्वर बन जाता है । इंटरनेट पर एक्सेस प्राप्त करने के लिए उस क्षैत्र मे इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर के साथ एकाउंट खोलना होता है।

नोट :– भारत मे इन्टरनेट की शुरूआत 15 अगस्त 1995 हुई थी।

वर्ल्ड वाइड वेब (WWW)

वर्ल्ड वाइड वेब (WWW) एक ओपन सोर्स इनफार्मेशन स्पेस है जहां डाक्यूमेंटस एवं बाकी वेब रिसोर्सेज को उनके यूआरएल द्वारा पहचाना जाता है ये डॉक्यूमेंट्स एवं वेब रिर्सोसेज हाइपरटेक्स्ट लिकं द्वारा आपस में जुडे होते है

वेबसाइट

एक वेब साइट वर्ल्ड वाइड वेब (WWW) फाइलों का एक सम्बधित संग्रह है जिसमें साथ में एक पेज भी होता है जिसे होम पेज कहते है एक होम पेज वो पेज होता है जो की किसी भी वेब साइट को एक्सेस करने पर सबसे पहले खुलता है

यूनिफॉर्म रिसोर्स लोकेटर (URL)

यूनिफॉर्म रिसोर्स रिसोर्स लोकेटर (युआरएल)(आमतौर पर एक वेब पते के रूप में जाना जाता है एक वेब संसाधन का संदर्भ है यह एक कंप्यूटर नेटवर्क पर

DIXIT COMPUTER SANSTHAN

इसका स्थान पता लगाने के लिये और उसको प्राप्त करने के लिये इस्तेमाल किया जाता है **(URL) :- http:// www.adress/directories/file name**

डोमेन नेम सिस्टम (DNS)

डोमेन नाम सिस्टम (डीएनएस) इंटरनेट डोमेन नामों का पता लगाने और उनका इन्टरनेट एड्रेस प्रोटोकॉल में अनुवाद करने का एक तरीका है एक डोमेन नाम एक इन्टरनेट एड्रेस पता को याद रखने का एक सार्थक और असान तरीका है अर्थात डोमेन नाम को आई पी मे और आई पी डोमेन नाम मे परिवर्तित करने के लिए डोमेन नेम सिस्टम का प्रयोग किया जाता है।

DNS :- http//:www.rajssa.in → 192.168.1.1

मॉडेम(modem)

मॉडेम एक डिवाइस है जो दो शब्दो से मिलकर बना है। Modulator – Demodulator जो डाटा संचारित करने के लिए एक कंम्प्यूटर को सक्षम बनाता है उदाहरण के तौर पर तारो के माध्यम से जाने वाला डाटा एनालॉग रूप में होता हैं तथा कम्प्यूटर मे डाटा डिजिटल रूप मे होता है। मोडेम का कार्य एनालॉग सिंग्नल को डिजिटल सिंग्नल मे और डिजिटल सिंग्नल को एनालॉग सिंग्नल मे परिवर्तर्तित करना होता है।

ब्राउजर (Brouser)

ब्राउजर वे ऐप्लीकेशन सॉफ्टवेर होते है, जो दूर स्थित किसी भी कम्प्यूटर पर हमारी पहुच बनाते है। ब्राउजर **वर्ल्ड वाइड वेब** पर कं**टेट को लोकेट** (खोजने) करते,प्राप्त करने(retrieve) एवं प्रदर्शित (display) करने में उपयोग में आती है जैसे इमेजेज वेब पेजेज विडियो कंटेट्स आदि एक कलाइंट/सर्वर मॉडल की तरह ब्राउजर एक क्लाइंट की तरह काम करता है जो की यूजर के कंप्यूटर पर रन होता है अर्थात ब्राउजर ऐसे सॉफ्टवेयर होते है जो दूर स्थित किसी भी कम्प्यूटर की फाईल को ऑपन करने, सेव करने, देखने, उसे डाउनलोड करने के सुविधा देते है।

नोट :– पहला ग्राफीकल वेब ब्राउजर ''मोजेक'' का निर्माण 1993 ई. मे मार्क लोवेल द्वारा किया गया था।

DIXIT COMPUTER SANSTHAN

मुख्य वेब ब्राउजर निम्न है। :–

1. google chrome 2. Mozila firfox 3. Netscap nevigator
4. Internet Explorar 5. Maichrosoft Age 6. Opera mini
7. Apple safari

सर्च इंजिन (Search Ingine)

सर्च इंजिन वे ऐप्लीकेशन सॉफ्टवेर होते है, जो इन्टरनेट पर उपलब्ध सूचनाओ में से विशेष सूचना को हमारी स्क्रीन मे प्रदर्शित करता है। अर्थात सर्च इंजिन के द्वारा हम आसानी से किसी भी टॉपीक के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते है।

मुख्य सर्च इंजिन निम्न है। :–

1. google.com 2. Yahoo.com 3. reddife.com
4. msn.com 5. bing.com 6. Baidu.com

आइ एस पी I.S.P.(Internet Service Provider)

आइ एस पी वे कम्पनियॉ होती है जो आपकी इन्टरनेट पर पहूच बनाती है। अर्थात आपसे मासीक शुल्क लेकर आपको इन्टरनेट उपलब्ध करवाती है। प्रमुख आइ एस पी निम्न है।

मुख्य आइ एस पी निम्न है। :–

1. Jio 2. Vodafone 3. Airtel
4. BSNL 5. VSNL 6. Reliance

प्रोटोकॉल (Protocol)

''नियमो के समुह को प्रोटोकॉल'' कहा जाता है। प्रोटोकॉल वे नियम होते हैं जो इलेक्ट्रोनिक उपकरणो को जोड़ने एवं उनके बीच सूचना आदान प्रदान करने के लिए बनाये जाते है। अर्थात जब सूचना एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर मे भेजी जाती है। तो एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर मे भेजने के कुछ नियम होते है जिन्हे प्रोटोकॉल कहा जाता है।

मुख्य प्रोटोकॉल निम्न है। :–

1. HTTP (hyper text transfer protocol)
2. HTTPS (hyper text transfer protocol secured)
3. HTML (hyper text Markup language)(इसका उपयोग वेब पेज निर्माण मे किया जाता है।)

DIXIT COMPUTER SANSTHAN

4. FTP (File Transfer protocol)(इसका उपयोग एक सिस्टम से दूसरे सिस्टम मे फाईल भेजने के लिए किया जाता है।)

5. SMTP (Simple mail transfer protocol)(इसका उपयोग मेल भेजने के लिए किया जाता है।)

6. POP (Post Office Protocol) (इसका उपयोग वेब मेल प्राप्त करने के लिए किया जाता है।)

7. SLIP (Serial line Internet protocol)

8. PPP (Point to Point protocol)

ई–मेल (Electronic Mail)

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजना ई–मेल कहलाता है।

ई–मेल का आविष्कार 1972 ई. मे ''रे टॉम लिंसन'' द्वारा किया गया था।

ई–मेल के मुख्य भाग निम्न है। :–

Compose :- मेल भेजने के लिए इस ऑप्सन का प्रयोग किया जाता है।

Inbox :- वह स्थान जहॉ आने वाले मेल को रखा जाता है।

Sent mail :- वह स्थान जहॉ भेजे गए मेल को रखा जाता है।

Draft mail :- वह स्थान जहॉ अधुरे मेल को रखा जाता है।

Spam mail :- वह स्थान जहॉ अनचाही मेल (जो किसी काम की नही है)को रखा जाता है।

Trash mail :- वह स्थान जहॉ डिलिट किए गए मेल को रखा जाता है।

To :- वह स्थान जहॉ जिस व्यक्ति को मेल भेजना है उसका व्यक्ति का एड्रेस लिखा जाता है।

CC (Carbon Copy):- वह स्थान जहॉ जिसको मेल को कॉपी भेजनी हो उसका पता लिखा जाता है।

BCC (Blind Carbon Copy):- वह स्थान जहॉ गुप्त रूप से जिसको मेल की कॉपी भेजनी हो उसका एड्रेस लिखा जाता है।

Subject :- वह स्थान जहॉ जो भेजा जा रहा है उसका नाम लिखा जाता है।

DIXIT COMPUTER SANSTHAN